❍ 24 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗साक्षातकार की आश तो नहीं रखी ?∗

➢➢ ∗बीमारी में भी बाप की याद में रहे ?∗

➢➢ ∗ज्ञान और योग के बल द्वारा माया की शक्ति पर विजय प्राप्त की ?∗

➢➢ ∗कर्म करते कर्म के बन्धनों से मुक्त रहे ?∗

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ ∗अगर सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी और जिस बात में कमजोर होंगे,∗ चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमंडल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, ∗उसी रूप में जान बूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है।∗

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं विशेष आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को विशेष आत्मायें समझते हो? *विशेष आत्मा विशेष कार्य के निमित्त हैं और विशेषतायें दिखानी हैं - ऐसे सदा स्मृति में रहे। विशेष स्मृति साधारण स्मृति को भी शक्तिशाली बना देती है। व्यर्थ को भी समाप्त कर देती है। तो सदा यह 'विशेष' शब्द याद रखना।*

〰✧ *बोलना भी विशेष, देखना भी विशेष, करना भी विशेष, सोचना भी विशेष। हर बात में यह विशेष शब्द लाने से स्वत: ही बदल जायेंगे और इसी स्मृति से स्व-परिवर्तन तथा विश्व-परिवर्तन सहज हो जायेगा।*

〰✧ *हर बात में विशेष शब्द ऐड करते जाना। इसी से जो सम्पूर्णता को प्राप्त करने का लक्ष्य है, मंजिल है उसको प्राप्त कर लेंगे।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ आज मुरलीधर बाप अपने मास्टर मुरलीधर बच्चों को देख रहे हैं। सभी बच्चे मुरली और मिलन के चात्रक हैं। ऐसे चात्रक सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के और कोई हो नहीं सकता। *यह ज्ञान मुरली और परमात्म मिलन न्यारा और प्यारा है।* दुनिया की अनेक आत्मायें परमात्म मिलन की प्यासी हैं, इन्तजार में हैं।

〰✧ लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें दुनिया के कोन में गुप्त रूप में अपना श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कर रहे हो क्योंकि *दिव्य बाप को जानने अथवा देखने के लिए दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि चाहिए जो बाप ने आप विशेष आत्माओं को दी है* इसलिए आप ब्राह्मण ही जान सकते और मिलन माना सकते हो।

〰✧ दुनिया वाले तो पुकारते रहते - *'एक बूंद के प्यासे हम'* और आप क्या कहते हो - *हम वर्से के अधिकारी हैं*, कितना अन्तर है - कहाँ प्यासी और कहाँ अधिकारी: अभी भी सभी अधिकारी बनकर अधिकार से आकर पहुँचे हो। दिल में यह नशा है कि *हम अपने बाप के घर में अथवा अपने घर में आये हो।* ऐसे नहीं कहेंगे कि हम आश्रम में आये हैं। अपने घर में आये हैं - ऐसे समझते हो ना?

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ इसीलिए अलबेले मत बनना, रिवाइज करो। बार-बार रिवाइज करो। क्यों भूल जाते हो? *जब कोई काम शुरू करते हो ना तो बहुत अच्छा सोचते हो - मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, ये भी आत्मा है, आत्मा शरीर से ये काम करा रही है, शुरू ऐसे करते हो। लेकिन काम करते-करते आत्मा मर्ज हो जाती है।* आप जो काम करते हो, उसमें हाथ तो चलता ही है लेकिन मन-बुद्धि सहित अपने को बिजी कर देते हो। *भल बॉडी-कान्सेज कम होते हो लेकिन एक्शन कॉन्सेज ज्यादा हो जाते हो।* फिर कहते हो बाबा मेरे से कुछ गलती नहीं हुई, मैंने किसको कुछ नहीं कहा, *लेकिन बापदादा कहते हैं कि मानो आप बॉडी कान्सेस नहीं हो, एक्शन कान्सेस हो और उसी समय कुछ हो जाये तो रिजल्ट क्या होगी? सोल कान्सेज जितना तो नहीं मिलेगा। तो इसकी विधि है बार-बार रिवाइज करो, बार-बार चेक करो।* जब काम पूरा होता है फिर आप सोचते हो, लेकिन नहीं, जब तक नेचरल सोल कान्सेज हो जाओ तब तक ये सहज विधि है बार-बार रिवाइज करना। *रिवाइज करेंगे तो जो पीछे सोचना पड़ता है वो नहीं होगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- आत्मा निश्चय करना, प्रवर्ति में रह शिवबाबा का बच्चा और पोत्रा समझना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा के कमरे में बेठी हुई मै आत्मा... अपलक अपने प्यारे बाबा को निहार रही हूँ... बाबा की वरदानी किरणों में शक्ति सम्पन्न बन रही हूँ... और मीठे चिंतन में खो रही हूँ... कि *प्यारे बाबा ने मुझे मेरे आत्मिक रूप का अहसास देकर... जीवन को नये आयाम दे दिए है.*.. स्वयं को शरीर समझकर जीना, कितना बोझिल और दुखदायी था... और आत्मिक भाव ने मुझ आत्मा को किस कदर हल्का, प्यारा, सुखी कर, सच्चे आनन्द से भर दिया है... अब देह के सारे बोझ काफूर हो गए है,.. और मै आत्मा परमात्मा शिव की यादो में मदमस्त हो गयी हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को देह के आवरण से छुड़ाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... अब इस देह भान से निकल स्वयं के सत्य स्वरूप में खो जाओ... आप देह नही हो, चमकती मणि हो, इसकी याद में गहरे डूब जाओ... *हर कर्म को करते हुए, सदा स्वयं को शिवबाबा का निराकारी बच्चा समझ, खुशियो में मुस्कराओ.*.. अलौकिक पिता ने हमे शिव बाबा से मिलवाया है... सदा इन मीठी यादो में रमण करो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की श्रीमत को दिल में समाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपको पाकर, सत्य की चमक से निखर गयी हूँ... मै मात्र शरीर नही, बल्कि प्यारी पवित्र आत्मा हूँ, इन मीठे अहसासो में हर पल झूम रही हूँ.*.. आपने मेरा जीवन सत्य की रौशनी से भर दिया है... और मै आत्मा आपकी यादो में, हर कर्म को सुकर्म बनाती जा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने प्यारे वजूद में गहरे डुबोते हुए

कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *ईश्वर पिता की मीठी गोद में बेठ, देह के मटमैले आकर्षण से निकलकर, अपनी आत्मिक तरंगो के आनंद में डूब जाओ.*.. जो हो उस सत्य के गहरे खो जाओ... दुनिया में रहते हुए... प्रव्रति में कार्य को करते हुए, सदा निराकारी पिता की यादो में खोये रहो... दिल से सदा यादो में खोये, अपने महान भाग्य की खुमारी में दिव्य कर्म करते रहो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से देवताई संस्कार स्वयं में भरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा *आपकी ज्ञान रौशनी में अज्ञान के गहरे अंधेरो से बाहर निकल रही हूँ... और अपने दमकते स्वरूप को पाकर, असीम ख़ुशी से भर गयी हूँ.*.. देह की नश्वरता और विकारो के दलदल से बाहर निकल गयी हूँ... अपने खुबसूरत वजूद को पाकर मालामाल हो गयी हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने निराकारी रूप के नशे से भरते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... सदा अपने चमकते रूप के भान में रह, इस दुनिया में हर कर्म को करो... *सदा स्वयं को आत्मा निश्चय कर, दिव्य कर्मो से अपने दामन को सुंदर बनाओ.*.. और इन सच्ची मीठी आत्मिक खुशियो को, अपने दिल आँगन में सदा के लिए पाओ...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की श्रीमत को गले लगाते हुए कहती हूँ :-* "मेरे सच्चे सहारे बाबा... *मीठे बाबा आपने मुझ आत्मा का हाथ पकड़कर... मुझे कितना प्यारा जीवन दे दिया है.*.. आपकी श्रीमत को पाकर, मै आत्मा बेफिक्र बादशाह बन गयी हूँ... हर कर्म आपकी श्रीमत प्रमाण कर, सच्चे आनन्द में झूम रही हूँ... मीठे बाबा को दिल से धन्यवाद देकर मै आत्मा... अपनी स्थूल देह में लौट आयी...

———————————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पावन बनकर पावन दुनिया में चलना है*"

➳ _ ➳ पवित्रता ही मेरे ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है। और इस श्रृंगार से सदा सजे सजाये रहने की स्वयं से प्रतिज्ञा करते - करते मैं मन बुद्धि से एक बहुत खूबसूरत पवित्र दुनिया मे पहुँच जाती हूँ। *पवित्रता के अद्भुत श्रृंगार से श्रृंगारित अनेक सुन्दर - सुन्दर परियाँ इस परीलोक में मैं देख रही हूँ*। श्वेत चमकीले वस्त्र, मस्तक पर चमकता हीरे जड़ित क्राउन, उनकी सुंदरता में जैसे चार चांद लगा रहा है। उनके अंग - अंग से निकल रही श्वेत रश्मियों से पूरा परीलोक प्रकाशित हो रहा है।

➳ _ ➳ इस परीलोक के सुंदर - सुन्दर अद्भुत नजारों को देखते - देखते मैं परिमहल के अंदर प्रवेश करती हूँ। *सामने रत्न जड़ित सिहांसन पर रानी परी बैठी है जो मुझे देखते ही बड़े प्यार से अपने पास बुलाती है और जैसे ही मुझे छूती है मेरी काया उसके समान प्रकाश की बन जाती है*। बाकी परियों के समान मैं भी उस परीलोक की परी बन अब उस खूबसूरत परीलोक में उनके साथ विहार कर रही हूँ।

➳ _ ➳ परीलोक के सुंदर नजारो का भरपूर आनन्द लेने के बाद मैं रानीपरी के पास पहुँचकर एक विचित्र दृश्य देखती हूँ। *रानी परी के रूप में मेरे सामने मम्मा बैठी है और बाकी परियों के रूप में वो सभी वरिष्ठ दादियां बैठी है जिन्होंने कठोर तप किया और सम्पूर्ण पवित्रता को अपने ब्राह्मण जीवन मे धारण किया तथा ज्ञान और योग से स्वयं को निखार कर खूबसूरत परीलोक की परियाँ बन गई*।

➳ _ ➳ अब मैं देखती हूँ उन सबको परीलोक की परियाँ बनाने वाले बापदादा एकाएक मेरे सामने उपस्तिथ होते हैं। *मुझे अपने पास आने का इशारा कर, पवित्रता के श्रृंगार से मुझे सदा सजे सजाये रहने का वरदान देकर अपनी शक्तिशाली दृष्टि से बाबा मुझे भरपूर कर देते हैं*। बड़े प्यार से बाबा मुझे अपने पास बिठाकर, प्यार भरी नजरों से मुझे निहारते हुए, पवित्रता की शक्ति

से मेरा श्रृंगार करते हैं। *मेरे गले मे दिव्य गुणों का हार और हाथों में मर्यादाओं के कंगन पहना कर सर्व ख़ज़ानों से बाबा मेरी झोली भर देते हैं और सुख, शांति, पवित्रता, प्रेम, आनन्द, शक्ति और गुणों से मुझे भरपूर कर देते हैं*।

➳ _ ➳ पवित्रता के श्रृंगार से सजे अपने सुन्दर सलौने स्वरूप को और अधिक निखारने के लिए अब मैं अनादि पवित्र स्वरूप में स्थित होकर, पवित्रता की किरणें चारों ओर फैलाती हुई, पवित्रता के सागर अपने शिव पिता के पास उनकी पवित्र दुनिया परमधाम की ओर चल पड़ती हूँ। *पवित्रता के सागर, अपने प्राणेश्वर शिव बाबा के सम्मुख जा कर मैं बैठ जाती हूँ और उनकी पवित्रता की शक्ति से स्वयं को भरपूर करने लगती हूँ*। पवित्रता की अनन्त किरणे बाबा से निकल कर मुझ आत्मा के ऊपर निरन्तर प्रवाहित हो रही हैं जिससे मुझ आत्मा के उपर चढ़ा विकारों का किचड़ा धुल रहा है और मैं आत्मा स्वच्छ बन रही हूँ।

➳ _ ➳ स्वच्छ और पवित्र बन कर मैं आत्मा अब अपने इसी अनादि स्वरूप में परमधाम से नीचे आ जाती हूँ और नीचे साकार सृष्टि पर आकर अपने साकारी तन में प्रवेश कर जाती हूँ। *अपने ब्राह्मण जीवन के स्लोगन "पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है" को सदैव स्मृति में रख मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण पवित्रता को अपने जीवन में धारण करने पर अब मैं पूरा अटेंशन दे रही हूँ*। पवित्रता का हथियाला बांध, गृहस्थ व्यवहार में कमल पुष्प समान रहकर अपनी रूहानियत की खुश्बू अब मैं चारों और फैला रही हूँ।

➳ _ ➳ *अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं के प्रति आत्मा भाई - भाई की दृष्टि मुझे प्रवृति में रहते भी पर - वृति का अनुभव करवा रही है। पवित्रता की गहन धारणा से अतीन्द्रीय सुख की अनुभूति करते हुए परिस्तान की परी बनने का पुरुषार्थ अब मैं निरन्तर कर रही हूँ*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)

(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ज्ञान और योग के बल द्वारा माया की शक्ति पर विजय प्राप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मायाजीत, जगतजीत आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव कर्म करते कर्म के बंधनों से मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ ।*
✺ *मैं बन्धनमुक्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आज भाग्य विधाता बाप अपने श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य की रेखायें देखदेख भाग्य विधाता बाप भी हर्षित होते हैं क्योंकि सारे कल्प में चक्र लगाओ तो आप जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसी धर्म

आत्मा, महान आत्मा, राज्य अधिकारी आत्मा, किसी का भी इतना बड़ा भाग्य नहीं है, जितना आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का है। मस्तक से अपने भाग्य की रेखाओं को देखते हो? बापदादा हर एक बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की श्रेष्ठ रेखा देख रहे हैं। आप सभी भी अपनी रेखायें देख रहे हो? *नयनों में देखो तो स्नेह और शक्ति की रेखायें स्पष्ट हैं। मुख में देखो मधुर श्रेष्ठ वाणी की रेखायें चमक रही हैं। होठों पर देखो रूहानी मुस्कान, रूहानी खुशी की झलक की रेखा दिखाई दे रही है। हृदय में देखो वा दिल में देखो तो दिलाराम के लव में लवलीन रहने की रेखा स्पष्ट है। हाथों में देखो दोनों ही हाथ सर्व खजानों से सम्पन्न होने की रेखा देखो, पांवों में देखो हर कदम में पदम की प्राप्ति की रेखा स्पष्ट है।* कितना बड़ा भाग्य है!

✺ *ड्रिल :- "अपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को देख श्रेष्ठ भाग्यवान होने का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाबा की याद में बैठी हूँ इस शरीर के भान से मुक्त हो, अपने चारों ओर के वातावरण से, देह के संबंधों से स्वयं को बुद्धि से मुक्त कर बाबा की याद में खो जाती हूँ... *और इस देह के बंधन को छोड़, इस साकारी दुनिया को छोड़ बाबा के पास उड़ जाती हूँ...* बाबा को देखते ही मेरे नयनों में प्रेम के आँसू छलक आते हैं और अपने भाग्य पर नाज़ होता है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा कितनी भाग्यशाली हूँ जो लाखों करोड़ों आत्माओं में से बाबा ने मुझे चुना है... मेरा भटकना बंद हो गया... *ये संसार की आत्माएं आपको पाने के लिए कितने प्रयत्न करती हैं कितने जप तप तीर्थ व्रत करती हैं परंतु फिर भी आपको पा नहीं पाती और मेरा कितना श्रेष्ठ भाग्य आप भाग्य विधाता बाप ने बना दिया है...*

➳ _ ➳ इस संसार में मुझ जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसी का भी नहीं है *चाहे कोई धर्म आत्मा हो, महान आत्मा हो, राज्य अधिकारी आत्मा हो किसी का भी भाग्य इतना बड़ा इतना महान नहीं है...* ये सारी दुनिया कलियुग में जी रही है

दुख भोग रही है और मैं आत्मा इस संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्तियों के झूले में झूल रही हूँ...

➳ _ ➳ मेरे प्यारे बाबा ने श्रेष्ठ भाग्य लिखने की कलम मुझे दे दी है मैं जैसा चाहूँ अपना भाग्य लिख सकती हूँ... *मेरे नयनों से स्नेह और रूहानियत झलकती है... मेरा मुख मधुर वाणी बोलता है और होठों पर रूहानी मुस्कान रहती है जिसे देख अन्य आत्माएं भी सोचती हैं कि इन्हें ज़रूर कुछ मिला है और इस रूहानी प्रेम का अनुभव करने के लिए मेरी ओर खिंची चली आती हैं...* मैं आत्मा उन आत्माओं को भी रूहानी दृष्टि से प्रेम के वाइब्रेशन दे उनके मन को भी ररूहानियत से भर देती हूँ...

➳ _ ➳ *मेरा हृदय दिलाराम बाप के लव में लवलीन है... मैं आत्मा बाप द्वारा दिये सर्व ख़ज़ानों से सम्पन्न हूँ...* मेरे बाबा विकारों के बदले मुझे अमूल्य रत्नों से भरपूर कर रहे हैं... मेरे हर कदम में पदम समाया हुआ है... मैं इस संसार की सबसे भाग्यशाली आत्मा हूँ... *मेरे भाग्य की रेखा को देख मेरे बाबा भी हर्षित होते हैं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔